लुसी मौड मोंटगोमरी

एलिजाबेथ मैकिलोड

चित्र : जॉन मंथा

लुसी मौड मोंटगोमरी

एलिजाबेथ मैकिलोड

चित्र : जॉन मंथा

क्या आपने कभी किताब लिखने का सपना देखा है? क्या आपने सोचा है कि आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकों के लिए प्रसिद्ध होना कैसा होगा?

जब लुसी मौड मोंटगोमरी एक युवा लड़की थी, तब उसने किताबें लिखने का सपना देखा था. जब वो बड़ी हुई तब   उसने ऐनी नाम की एक लड़की के बारे में लिखा. ऐनी एक घर में रहती थी जिसका नाम "ग्रीन गैबल्स" था.

“ऐनी ऑफ ग्रीन गैबल्स” के बारे में किताबों ने लुसी मौड मोंटगोमरी को दुनिया के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक बना दिया.

लुसी मौड मोंटगोमरी का जन्म कनाडा के प्रिंस एडवर्ड आइलैंड में 1874 में हुआ था. उन्हें लुसी नाम से नफरत थी, इसलिए उन्होंने लोगों से उन्हें मौड बुलाने के लिए कहा.

मौड ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि लोगों ने उसके नाम को सही तरह से लिखें.

मौड के दो साल के होने से पहले ही उसकी मां का देहांत हो गया था. उसके पिता को नौकरी पाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ा.

मौड अपने दादा-दादी के साथ कैवेंडिश, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड में रहती थी. दादा-दादी को उम्मीद थी कि वो हमेशा बहुत अच्छी और शांत रहेंगी.

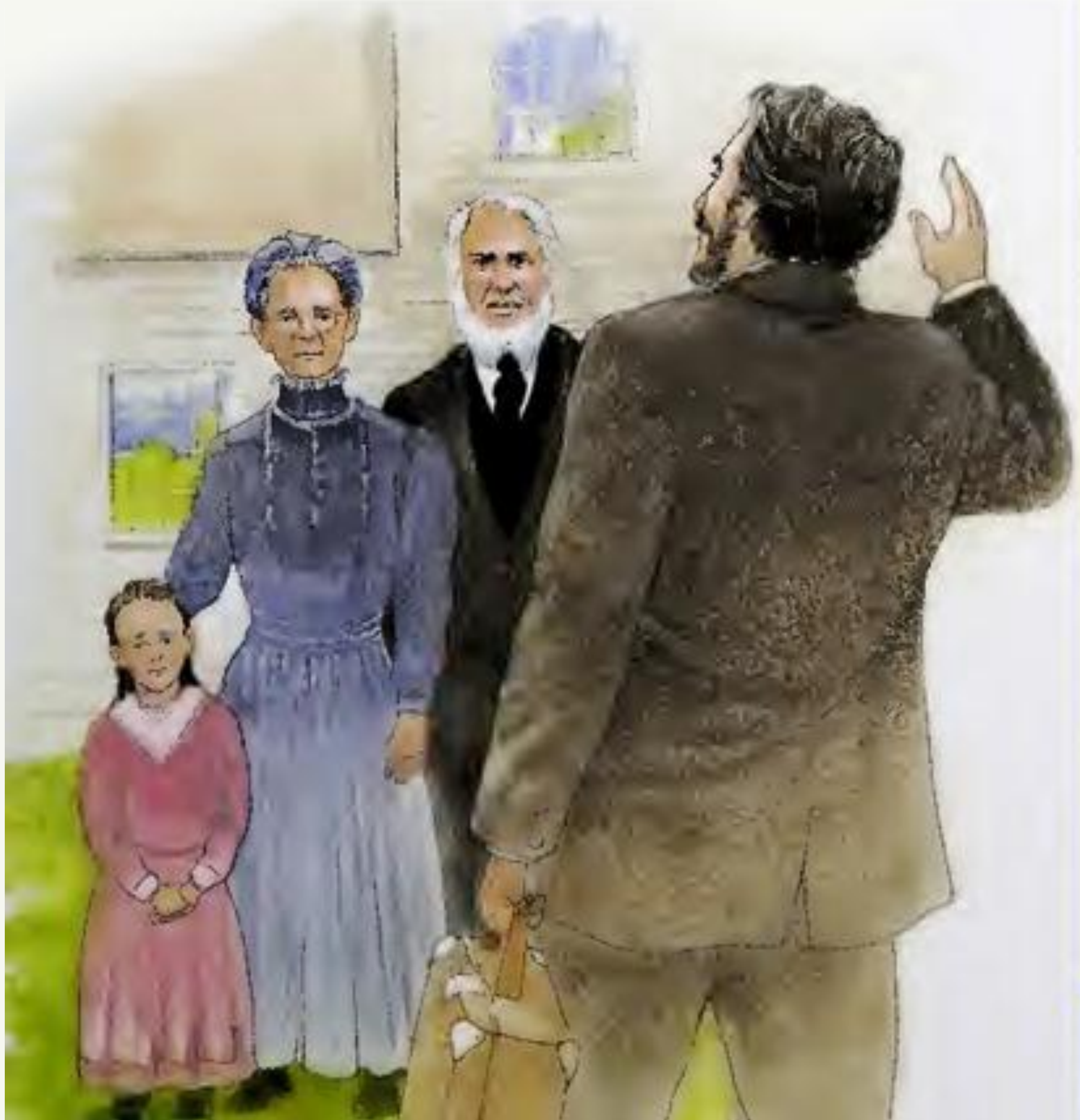

मौड अक्सर उदास और अकेली रहती थी. खुद को बेहतर महसूस कराने के लिए, उसने लघु कथाएँ और कविताएँ लिखनी शुरू कीं.

मौड ने अपनी गुड़िया, अपनी बिल्लियों और अपनी पसंदीदा जगहों के बारे में कहानियाँ लिखीं. उसने स्कूल में हुई चीजों के बारे में भी लिखा. मौड को लिखना बहुत पसंद था.

मौड जब 16 साल की थी, तब एक अखबार में उसकी एक कविता छपी. उससे वो बहुत खुश हुई! उसके बाद मौड ने और अधिक लिखना शुरू किया.

जल्द ही मौड की लघु कथाएँ और कविताएँ कई अखबारों और पत्रिकाओं में छपीं.

कुछ साल बाद, मौड एक शिक्षक बनने के लिए पढ़ने गई. लेकिन वहां भी वो हमेशा लिखने के लिए समय निकालती थी.

पढ़ाना शुरू करने के बाद भी मौड सुबह जल्दी उठ जाती थी ताकि वो स्कूल से पहले कुछ लिख सके.

सर्दियों में मौड का बेडरूम बहुत ठंडा होता था. कभी-कभी उसके तकिये पर खिड़की के आसपास की दरारों में से बर्फ उड़कर आती थी.

मौड को लिखते समय गर्म रहने के लिए अपना भारी सर्दियों का कोट पहनना पड़ता था.

मौड के दादा की मृत्यु 1898 में हो गई थी. उनकी दादी बूढ़ी थीं और उनके लिए अकेले रहना मुश्किल था. तब मौड ने पढ़ाना छोड़ दिया. वो अपनी दादी के साथ रहने के लिए कैवेंडिश वापस चली गई.

मौड ने खाना बनाया, सफाई की और अपनी दादी की देखभाल की. उसने दादी की, शहर का डाकघर चलाने में मदद की. वो डाकघर उसकी दादी की रसोई में था, मौड ने पत्रों को भेजने के लिए डाक टिकट बेचे.

मौड ने व्यस्त होने के बावजूद कभी लिखना बंद नहीं किया. अब वो अपनी कविताओं और लघु कथाओं को उन पत्रिकाओं में छपवाने की कोशिश कर रही थी जो केवल सर्वश्रेष्ठ लेखन ही छापती थीं.

जल्द ही उनमें से कुछ पत्रिकाएँ मौड की कविताएँ और कहानियों को छापने लगीं.

मौड लंबे समय से एक किताब लिखना चाहती थी. लेकिन उसके दिमाग में ऐसी कहानी के विचार कभी नहीं आया जो पूरी किताब के लिए अच्छा हो.

एक दिन मौड एक पुरानी नोटबुक के पन्ने पलट रही थी. इस नोटबुक में उसने कहानियों और कविताओं के बारे में अपने विचारों को सहेजा था.

मौड ने एक कहानी की रूपरेखा लिखी थी. एक बूढ़ा दंपत्ति अपने घर के काम में मदद करने के लिए एक लड़के की तलाश में था. पर लड़के की बजाए उन्हें एक युवा लड़की मिली.

मौड ने तुरंत ही इन पात्रों के बारे में एक कहानी लिखने की योजना बनाई.

मौड ने अपने मन में लड़की की छवि की कल्पना की. उसके चमकीले लाल बाल थे.

मौड ने लड़की का नाम ऐनी रखा. मौड की तरह, ऐनी यह सुनिश्चित किया कि लोग उसके नाम का उच्चारण सही करें. मौड ने फैसला किया कि ऐनी लोगों को बता सकती है कि उसका नाम "ऐनी-विद-ई" था.

मौड ने सोचा कि ऐनी और वृद्ध दंपत्ति एक ऐसे घर में रह सकते थे जो मौड के घर के पास था.

इस घर में एक हरे रंग का गैबल था. गैबल, दीवार का त्रिभुजाकार हिस्सा होता है जो छत को छूता है. मौड ने तय किया कि उसकी कहानी में घर का नाम "ग्रीन गैबल्स" होगा.

मौड ने उन बहुत सारे कारनामों के बारे में सोचा जो ऐनी और उसके दोस्त आपस में मिलकर कर सकते थे.

क्या मौड को अंत में वो विचार मिला जो पूरी किताब के लिए अच्छा होगा?

मई 1905 में वसंत की एक शाम, मौड ने ऐनी की कहानी लिखना शुरू की. उसे इस युवा लड़की के बारे में लिखने में बहुत मज़ा आया.

मौड किचन में काम करते-करते लिखती. वो खिड़की के पास टेबल पर बैठकर लिखती. जब वो लिखती थी तो डूबते सूरज की किरणें पन्ने पर प्रकाश डालती थीं.

हर दिन जब वो बर्तन धोती तो मौड सोचती कि ऐनी क्या करेगी. जब मौड कपड़े सुखाती तो निर्णय लेती कि ऐनी क्या कहेगी

उससे मौड का समय बचता था. इसलिए जब वो लिखने बैठती तो उसे स्पष्ट पता होता था कि ऐनी की कहानी में आगे क्या होगा.

पूरी गर्मियों में, मौड ने ऐनी के बारे में लिखा. मौड अपना अधिकांश लेखन शाम के समय करती थी, दिन के बाकी सभी काम ख़त्म करने के बाद.

अक्टूबर में, मौड ने अंततः "ऐनी ऑफ़ ग्रीन गैबल्स" का लेखन समाप्त किया.

मौड ने ध्यान से वो कहानी टाइप की. उसने सभी पन्नों को लपेटा. फिर उसने उन्हें उस कंपनी को भेजा जो किताबें छापती और बेचती थी.

मौड को तुरंत कंपनी ने जवाब दिया. वो लोग उसकी किताब नहीं छापना चाहते थे.

फिर मौड ने अपनी किताब दूसरी कंपनी को भेजी. उन्हें भी किताब पसंद नहीं आई.

मौड ने अपनी पाण्डुलिपि तीन अन्य कंपनियों को भेजी. उन सबने पुस्तक को छापने से मना किया.

थोड़ा रोने और दुखी होने के बाद, मौड ने वो कहानी एक पुराने डिब्बे में रख दी. उसने डिब्बे को एक अलमारी में छिपा दिया.

मौड ने किताब को भूलने की बहुत कोशिश की. शायद वो कविताएँ और लघु कथाएँ लिखने में अच्छी थी, बड़ी किताबों में नहीं.

कुछ महीने बाद मौड एकदिन अपनी अलमारी की सफाई कर रही थी. उसने वो बक्सा खोला जिसमें उसकी किताब थी.

मौड ने उसे फिर से पढ़ना शुरू किया. "शायद मैं उसके कुछ हिस्सों को छोटी कहानियों में बदल सकती हूँ," उसने सोचा.

जैसे-जैसे मौड पढ़ती गई, वो और अधिक उत्साहित होती गई. "यह एक अच्छी किताब है," उसने खुद से कहा. "मैं इसे एक और कंपनी को भेजूंगी."

वो नई कंपनी मौड की किताब के बारे में क्या सोचेगी?

15 अप्रैल 1907 को मौड को उस कम्पनी का एक पत्र मिला, जिसे उसने अपनी किताब भेजी थी. मौड ने जल्दी से पत्र खोला.

कंपनी को उसकी किताब पसंद आई थी!

अंत में मौड की कहानी "ऐनी ऑफ ग्रीन गैबल्स" दुकानों में बिकने को तैयार थी. मौड का सपना साकार हो गया था.

करीब एक साल बाद मौड को बेहद खास पैकेट मिला. उसे खोलते समय उसके हाथ काँप रहे थे. उसमें उसकी पुस्तक "ऐनी ऑफ ग्रीन गैबल्स" की एक मुद्रित प्रति थी. मौड रोमांचित हो उठी.

मौड ने और भी कई किताबें, और सैकड़ों लघु कथाएँ और कविताएँ लिखीं. उनकी आठ पुस्तकें ऐनी और उसके परिवार के बारे में हैं.

मौड ने अपने लेखन के लिए कई पुरस्कार जीते. वह पूरी दुनिया में मशहूर हो गईं.

मौड की किताबें आज भी लोग खूब पसंद करते हैं. खासकर लोग एक लाल बालों वाली लड़की ऐनी की कहानियां बहुत पसंद करते हैं.

मौड के बारे में अधिक तथ्य

• लुसी मौड मोंटगोमरी का जन्म 30 नवंबर, 1874 को हुआ था. 24 अप्रैल, 1942 को उनकी मृत्यु हो गई.

• मौड ने कुल 24 किताबें लिखीं. साथ में सैकड़ों लघु कथाएँ और कविताएँ भी लिखीं.

• प्रिंस एडवर्ड आइलैंड पर स्थित आप उस घर को आज भी देख सकते हैं जिसने मौड को ग्रीन गैबल्स का विचार दिया था.

• मौड को बिल्लियाँ बहुत पसंद थीं. उनकी कई किताबों और कहानियों में बिल्लियाँ हैं.

समाप्त